



युक्तहीन वा बुद्धहीन वचारे धर्मरे हानि वा क्षति साधति ह्य.

"कबेलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः।

युक्तहीनवचारे तु धर्महानिः प्रजायते॥"

-----[बृहस्पति स्मृति/ व्यवहार कान्डम्/ ११४ तम श्लोक]

□ युक्तहीन वा बुद्धहीन वचारे धर्मरे हानि वा क्षति साधति ह्य. ।

एइ संस्कृत श्लोकटि बृहस्पति संहति (वा बृहस्पति स्मृति) थकेने नोया ह्यछे, या कानो ब्यक्तिरि शुधु कथार उपर नरिभर करे अन्ध अनुकरण/ग्रन्थ पडे वा तार दोहाइ दयिने नय, वरं युक्तिरिभर शास्त्ररे वचाररे कथा बले। एर अर्थ हलोः कबेल कानो ब्यक्तिरि शुधु कथार उपर नरिभर करे कानो सदिधान्त नोया उचति नय; कारण युक्तहीन वचारे धर्मरे हानि ह्य।

"युक्तहीन वचारे तु धर्महानि प्रजायते" हलो बृहस्पति स्मृति (व्यवहार कान्डम्, ११४ श्लोक) थकेने उद्धृत एकटि बधि्यात नीतविक्य, यार अर्थ □ युक्ति वा वचार वविचेना छाडा कबेल अनुसरण करले धर्मरे हानि वा क्षति ह्य. ।

एर अर्थ हलो अन्धविश्रिवास त्याग करे शास्त्ररे युक्ति दयिने सत्य वा धर्म नरिणय. करी उचति, शुधु कानो ब्यक्तिरि शुधु कथार उपर नरिभर करे अन्ध अनुकरण/ग्रन्थ पडे वा तार दोहाइ दयिने दोहाइ दयिने नय ।

কোনো কিছু বিশ্বাস করার আগে তা শাস্ত্রের যুক্তসিঙ্গত কনা, তা যাচাই করা প্রয়োজন।

যদি কোনো কিছু প্রথা হিসেবে চলে আসছে কিন্তু তা যুক্তিও হতিবোধের বিরোধী, তবে তা অনুসরণ করলে প্রকৃত ধর্মে বা নীতিবোধের ক্ষতি হয়।

অন্ধবিশ্বাস বা অন্ধ আনুগত্য কখনোই সঠিক পথ দেখাতে পারেনা, বরং তা 'ধর্মহানি' বা নীতিবোধের বিনাশ ঘটায়। অর্থাৎ, শুধু কোনো ব্যক্তির শুধু কথার উপর নির্ভর করে অন্ধ অনুকরণ/গ্রন্থ পড়ে - সেই কথাকে যুক্তির কষ্টপিথরে যাচাই করেই গ্রহণ করা উচিত।

এই বাক্যটি অন্ধবিশ্বাস বর্জন করে শাস্ত্রের বচারবুদ্ধি প্রয়োগের ওপর গুরুত্ব দিয়ে কর্ম / চিন্তা / বচার করা উচিত।

